भारत का अमृत महोत्सव के तहत औषधीय पौधों की विविधता और संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम की रिपोर्ट

#आजादी का अमृत महोत्सव# की श्रृंखला में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा 21 अप्रैल, 2022 को मूलकोटी पंचायत, मशोबरा, जिला, शिमला (हि.प्र.) के ग्रामीणों के लिए पंचायत मुख्यालय मूलकोटी में "**हिमालयी क्षेत्रों में औषधीय पौधों की विविधता और संरक्षण**" पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमे मूलकोटी मशोबरा के प्रधान एवं वार्ड मेम्बर्स सहित 30 ग्रामीणों ने भाग लिया।

डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने **श्री शेर सिंह, प्रधान,** वार्ड सदस्यों सहित सभी उपस्थित लोगों का स्वागत किया एवं अमृत महोत्सव के महत्व और इस कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। उन्होंने संस्थान की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। डॉ॰ सिंह ने औषधीय पौधों की विविधता पर प्रकाश डाला। डॉ॰ सिंह ने बनककड़ी, चौरा, कशमल, पाषानभेद, बेखल, मुश्कबाला, इत्यादि पर संक्षेप में जानकारी दी इसके अलावा उन्होनें दशमूल एवं अष्टवर्ग औषधीय पौधों के बारे में भी बताया।

डॉ॰ संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी ने जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि बदलते परिवेश में किसानों को स्मार्ट फ़ार्मिंग अपनाने की आवश्यकता है। वर्षा के पानी को संरक्षित करना अति आवश्यक है ताकि पानी की कमी को पूरा किया जा सके। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र में चौरा और मुश्कबाला जैसे औषधीय पौधों को उगाने की अपार संभावनाए है तथा किसानों को औषधीय पौधों की खेती को भी बिकल्प के रूप में रखना चाहिए। **डॉ. शर्मा** ने कहा कि शुरुआत में व्यक्तिगत उपयोग हेतु औषधीय पौधों को उगाने का प्रयास करना चाहिए और फिर व्यावसायिक स्तर पर इनकी खेती किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करेगी। **डॉ. प्रवीण रावत, वैज्ञानिक-बी** ने लोगों के सामाजिक आर्थिक जीवन और मृदा संरक्षण में बांस के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने चारा बैंक और हरे चारे से साइलेज बनाने की प्रक्रिया के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि चारा बैंक विकसित कर बर्ष भर चारा उपलब्ध हो सकता है। इसके अलावा उन्होंने सालेज के महत्व को भी लोगों को बताया। **डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, सीटीओ** ने उत्तर पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोगों के बारे में जानकारी दी। **श्री शेर सिंह, प्रधान** मूलकोटी पंचायत ने संस्थान के निदेशक एवं डॉ॰ जगदीश सिंह, वैज्ञानिक का उनकी पंचायत में हिमालयी क्षेत्रों में औषधीय पौधो की विविधता एवं संरक्षण के उपाय पर कार्यक्रम करवाने के लिए धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम के छायाचित्र एवं मीडिया कवरेज

औषधीय पौधों की विविधता और संरक्षण का बताया महत्व

मूलकोटी मशोबरा में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते लोग।

हिमाचल दस्तक ■ शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के तहत मूलकोटी मशोबरा में 'हिमालयी क्षेत्रों में औषधीय पौधों की विविधता एवं संरक्षण के उपाय' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इसमें स्टेट फॉरेस्ट फ्रंट लाइन स्टाफ एवं मूलकोटी मशोबरा के ग्रामीणों सहित 30 लोगों ने भाग लिया। डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने शेर सिंह प्रधान, वार्ड सदस्यों सहित लोगों को इस कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। डॉ. सिंह ने औषधीय पौधों की विविधता पर प्रकाश डाला। डॉ. सिंह ने बनककड़ी, चौरा, कशमल, पषानभेद, वनसखा, बेखल, मुश्कबाला की जानकारी दी। उन्होंने विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी। डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक ने जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को बताया की स्मार्ट फार्मिंग अपनाने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में चौरा और मुश्कबाला जैसे औषधीय पौधों को उगाने की अपार संभावना हैं व किसानों को औषधीय पौधों की खेती को भी विकल्प के रूप में रखना चाहिए। उन्होंने चौरा के पारंपरिक उपयोग के विषय एवं उसके उपयोग से मिलने वाले लाभ के विषय में लोगों को बताया।

मशोबरा में औषधीय पौधों के संरक्षण पर मंथन

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान मशोबरा में हिमालयी क्षेत्रों में औषधीय पौधों की विविधता एवं संरक्षण के उपाय कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित हुआ। स्टेट फारेस्ट फ्रंट लाइन स्टाफ एवं मूलकोटी मशोबरा के ग्रामीणों सहित 30 लोगों ने भाग लिया। डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने शेर सिंह, प्रधान, वार्ड सदस्यों सहित सभी उपस्थित लोगों का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. सिंह ने औषधीय पौधों की विविधता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बनककड़ी, चौरा, कशमल, पषानभेद, वनसखा, बेखल, मुश्कबाला पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी ने जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किसानों को स्मार्ट फार्मिंग अपनाने की आवश्यकता है। वर्षा के पानी को संरक्षित करना अति आवश्यक है ताकि पानी की कमी को पूरा किया जा सके। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र में चौरा और मुश्कबाला जैसे औषधीय पौधों को उगाने की अपार संभावना है तथा किसानों को औषधीय पौधों की खेती को भी विकल्प के रूप में रखना चाहिए। डॉ. शर्मा ने कहा कि शुरुआत में व्यक्तिगत उपयोग हेतु औषधीय पौधों को उगाने का प्रयास करना चाहिए और फिर व्यावसायिक स्तर पर इनकी खेती किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करेगी। उन्होंने चौरा के पारंपरिक उपयोग के विषय एवं उसके उपयोग से मिलने वाले लाभ के विषय में लोगों को बताया और उसके खेती के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया। डॉ. प्रवीण रावत, वैज्ञानिक-बी ने बांस के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बांस मृदा अपरदन रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और बहुपयोगी है।

शिक्षा के
को फील्ड
ल्ड में ले
रा रही हैं।
अंतर्गत दो
त हो चुकी
मिला है।
के स्थान
बच्चों को